लिङ्गाष्टकम्

Traditional, author unknown · rashikundli.com

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं
निर्मल भासित शोभित लिङ्गं
जन्मज दुःख विनाशक लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गं
देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं
कामदहन करुणाकर लिङ्गं
रावण दर्प विनाशक लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गं
सर्व सुगन्ध सुलेपित लिङ्गं
बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गं
सिद्ध सुरासुर वंदित लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गं
कनक महामणि भूषित लिङ्गं
फणिपति वेष्टित शोभित लिङ्गं
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गं
कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं
पंकज हार सुशोभित लिङ्गं
संचित पाप विनाशक लिङ्गं
तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गं
देवगणार्चितसेवितलिङ्गं

भावै-र्भक्तिभिरेव च लिङ्गं

दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं

तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गं

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं

सर्वसमुद्भव कारण लिङ्गं

अष्टदरिद्र विनाशन लिङ्गं

तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गं

सुरगुरु सुरवर पूजित लिङ्गं

सुरवन पुष्प सदार्चित लिङ्गं

परात्परं परमात्मकलिङ्गं

तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गं

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते

यह पाठ कहाँ से लिया गया है: Sanskrit Wikisource
RashiKundli संपादकीय टीम द्वारा लिखित और समीक्षित · rashikundli.com